فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ

सच्चाई को	और उस ने झुटलाया	अल्लाह पर	झूट बान्धा	से-जिस	बड़ा ज़ालिम	पस कौन

اِذْ جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِيْ جَآءَ

आया	और जो शख़्स	32	काफ़िरों के लिए	ठिकाना	जहन्नम में	क्या नहीं	वह उस के पास आई	जब

بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿٣٣﴾ لَهُمْ

उन के लिए	33	मुत्तक़ी (जमा)	वह	यही लोग	उस को	और उस ने उस की तस्दीक़ की	सच्चाई के साथ

مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٤﴾ لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ

ताकि दूर कर दे अल्लाह	34	नेकोकारों (जमा)	जज़ा	यह	उन का रब	हाँ-पास	जो वह चाहेंगे

عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ

बेहतरीन (आमाल)	उन का अजर	और उन्हें जज़ा दे	उन्हों ने किए (आमाल)	वह जो	बुराई	उन से

الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ وَيُخَوِّفُوْنَكَ

और वह ख़ौफ़ दिलाते हैं आप को	अपने बन्दे को	काफ़ी	अल्लाह	क्या नहीं	35	वह करते थे	वह जो

بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾

36	कोई हिदायत देने वाला	तो नहीं उस के लिए	गुमराह कर दे अल्लाह	और जिस	उस के सिवा	उन से जो

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ

ग़ालिब	क्या नहीं अल्लाह	गुमराह करने वाला	कोई	उस के लिए	तो नहीं	अल्लाह हिदायत दे	और जिस

ذِي انْتِقَامٍ ﴿٣٧﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों	पैदा किया	कौन-किस	तुम पूछो उन से	और अगर	37	बदला लेने वाला

وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ

जिन को तुम पुकारते हो	क्या पस देखा तुम ने	फ़रमा दें	अल्लाह	तो वह ज़रूर कहेंगे	और ज़मीन

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ

दूर करने वाले हैं	वह सब	क्या	कोई ज़र्र	चाहे मेरे लिए अल्लाह	अगर	अल्लाह के सिवा	से

ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ

फ़रमा दें	उस की रहमत	रोकने वाले हैं	वह सब	क्या	कोई रहमत	वह चाहे मेरे लिए	या	उस का ज़र्र

حَسْبِيَ اللّٰهُ ؕ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٣٨﴾ قُلْ يٰقَوْمِ

ऐ मेरी क़ौम	फ़रमा दें	38	भरोसा करने वाले	भरोसा करते हैं	उस पर	काफ़ी है मेरे लिए अल्लाह

اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾

39	तुम जान लोगे	पस अनक़रीब	काम करता हूँ	बेशक मैं	अपनी जगह	पर	तुम काम किए जाओ

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٤٠﴾

40	दाइमी	अज़ाब	उस पर	और उतर आता है	रुस्वा कर दे उस को	अज़ाब	आता है उस पर	कौन

पस उस से बड़ा ज़ालिम और कौन? जिस ने अल्लाह पर झूट बान्धा, और सच्चाई को झुटलाया जब वह उस के पास आई, क्या काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं? (32)

और जो शख़्स सच्चाई के साथ आया और उस ने उस की तस्दीक़ की, यही लोग मुत्तक़ी (परहेज़गार) हैं। (33)

उन के लिए हैं उन के रब के हां जो (भी) वह चाहेंगे, यह जज़ा है नेकोकारों की। (34)

ताकि अल्लाह उन से उन के आमाल की बुराई दूर करदे और उन्हें नेक कामों का अजर दे उन के बेहतरीन अमल के लिहाज़ से जो वह करते थे। (35)

क्या अल्लाह अपने बन्दे को काफ़ी नहीं? और वह आप (स) को डराते हैं उन (झूटे माबूदों) से जो उस के सिवा हैं, और जिस को अल्लाह गुमराह करदे तो उस को कोई हिदायत देने वाला नहीं। (36)

और जिस को अल्लाह हिदायत दे तो उस को कोई गुमराह करने वाला नहीं, क्या अल्लाह ग़ालिब, बदला देने वाला नहीं? (37)

और अगर आप (स) उन से पूछें कि आस्मानों और ज़मीन को किस ने पैदा क्या? तो वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह ने", आप (स) फ़रमा दें: पस क्या तुम ने देखा जिन को पुकारते हो अल्लाह के सिवा, अगर अल्लाह मेरे लिए कोई ज़र्र चाहे तो क्या वह सब उस का ज़र्र दूर कर सकती हैं? या वह मेरे लिए कोई रहमत चाहे तो क्या वह सब उस की रहमत रोक सकती हैं? आप (स) फ़रमा दें मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं। (38)

आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम किए जाओ, बेशक मैं (अपना) काम करता हूँ, पस अनक़रीब तुम जान लोगे। (39)

कौन है जिस पर आता है अज़ाब जो उसे रुस्वा कर दे और (कौन है) जिस पर दाइमी अज़ाब उतरता है? (40)

बेशक हम ने आप (स) पर लोगों (की हिदायत) के लिए किताब नाज़िल की हक़ के साथ, पस जिस ने हिदायत पाई तो अपनी ज़ात के लिए, और जो गुमराह हुआ तो इस के सिवा नहीं कि वह अपने लिए गुमराह होता है, और आप (स) नहीं उन पर निगहबान (ज़िम्मेदार)। (41)
अल्लाह रूह को उस की मौत के वक़्त क़ब्ज़ करता है, और जो न मरे अपनी नींद में, जिस की मौत का फ़ैसला किया तो उस को (नींद की सूरत में ही) रोक लेता है और दूसरी (रूहों को) छोड़ देता है एक मुक़र्ररा वक़्त तक, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं। (42)
क्या उन्हों ने अल्लाह के सिवा बना लिए हैं शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करने वाले? आप (स) फ़रमा दें: (इस सूरत में भी) कि वह कुछ भी इख़्तियार न रखते हों और न समझ रखते हों? (43)
आप (स) फ़रमा दें: अल्लाह ही के (इख़्तियार में) है तमाम शफ़ाअत, उसी के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, फिर उस की तरफ़ तुम लौटोगे। (44)
और जब ज़िक्र किया जाता है अल्लाह वाहिद का, तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन के दिल मुतनफ़्फ़िर हो जाते हैं, और जब उन का ज़िक्र किया जाता है जो उस के सिवा हैं (यानी औरों का) तो फ़ौरन ख़ुश हो जाते हैं। (45)
आप (स) फ़रमा दें: ऐ अल्लाह! पैदा करने वाले आस्मानों और ज़मीन के, जानने वाले पोशीदा और ज़ाहिर के, तू अपने बन्दों के दरमियान (इस अमर में) फ़ैसला करेगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (46)
और अगर जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, जो कुछ ज़मीन में है सब का सब और उस के साथ उतना ही (और भी) उन के पास हो तो वह बदले में दे दें रोज़े क़ियामत बुरे अज़ाब से (बचने के लिए), और अल्लाह की तरफ़ से उन पर ज़ाहिर हो जाएगा जिस का वह गुमान (भी) न करते थे। (47)

إِنَّآ أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى

हिदायत पाई	पस जिस	हक़ के साथ	लोगों के लिए	किताब	आप (स) पर	बेशक हम ने नाज़िल की

فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ أَنْتَ عَلَيْهِمْ

उन पर	आप (स)	और नहीं	अपने लिए	वह गुमराह होता है	तो इस के सिवा नहीं	गुमराह हुआ	और जो	तो अपनी ज़ात के लिए

بِوَكِيْلٍ ﴿٤١﴾ اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْأَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ

और जो	उस की मौत	वक़्त	(जमा) जान-रूह	क़ब्ज़ करता है	अल्लाह	41	निगहबान

لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ

मौत	उस पर	फ़ैसला किया उस ने	वह जिस	तो रोक लेता है	अपनी नींद	में	न मरे

وَيُرْسِلُ الْأُخْرٰٓى إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	मुक़र्ररा	एक वक़्त	तक	दूसरों को	वह छोड़ देता है

يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ أَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ ۗ قُلْ

फ़रमा दें	शफ़ाअत करने वाले	अल्लाह के सिवा	उन्हों ने बना लिया	क्या	42	ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं

أَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٣﴾ قُلْ لِّلّٰهِ

फ़रमा दें अल्लाह के लिए	43	और न वह समझ रखते हों	कुछ	वह न इख़्तियार रखते हों	क्या अगर

الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۗ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ ثُمَّ إِلَيْهِ

उस की तरफ़	फिर	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत	उसी के लिए	तमाम	शफ़ाअत

تُرْجَعُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَإِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	दिल	मुतनफ़्फ़िर हो जाते हैं	एक-वाहिद	ज़िक्र किया जाता है अल्लाह	और जब	44	तुम लौटोगे

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ إِذَا هُمْ

वह	तो फ़ौरन	उस के सिवा	उन का जो	ज़िक्र किया जाता है	और जब	आख़िरत पर	ईमान नहीं रखते

يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٥﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ عٰلِمَ

और जानने वाला	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करने वाला	ऐ अल्लाह	फ़रमा दें	45	ख़ुश हो जाते हैं

الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا

वह थे	उस में जो	अपने बन्दों	दरमियान	तू फ़ैसला करेगा	तू	और ज़ाहिर	पोशीदा

فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْأَرْضِ

और जो कुछ ज़मीन में	ज़ुल्म किया	उन के लिए जिन्हों ने	हो	और अगर	46	इख़्तिलाफ़ करते	उस में

جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ

अज़ाब	बुरे	से	उस को	बदले में दें वह	उस के साथ	और इतना ही	सब का सब

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٧﴾

47	गुमान करते	न थे वह	जो	अल्लाह (की तरफ़) से	और ज़ाहिर हो जाएगा उन पर	रोज़े क़ियामत

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ

उस का	वह थे	जो	उन को	और घेर लेगा	जो वह करते थे	बुरे काम	और ज़ाहिर हो जाएंगे उन पर

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾ فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ اِذَا

जब फिर	कोई तकलीफ़ वह हमें पुकारता है	इन्सान	पहुँचती है	फिर जब	48	मज़ाक़ उड़ाते

خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ

एक आज़माइश	बल्कि यह	इल्म	पर	मुझे दी गई है	यह तो	वह कहता है	अपनी तरफ़ से	कोई नेमत	हम अता करते हैं उस को

وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

इन से पहले	से	जो लोग	यक़ीनन यही कहा था	49	जानते नहीं	उन में अक्सर	और लेकिन

فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ

बुराइयां	पस उन्हें पहुँचें	50	वह करते थे	जो	उन से	तो वह न दूर किया

مَا كَسَبُوْا وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ

बुराइयां	जल्द पहुँचेंगी इन्हें	इन में से	और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया	जो उन्हों ने कमाई

مَا كَسَبُوْا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥١﴾ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ

फ़राख़ करता है	कि अल्लाह	क्या यह नहीं जानते	51	आजिज़ करने वाले	और यह नहीं	जो इन्हों ने कमाया

الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

उन लोगों के लिए	निशानियां	इस में	बेशक	और तंग कर देता है	वह चाहता है	जिस के लिए	रिज़्क़

ع ٥ ١١ ٢

يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ

अपनी जानें	पर	ज़ियादती की	वह जिन्हों ने	ऐ मेरे बन्दो	फ़रमा दें	52	वह ईमान लाए

لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا

सब	गुनाह (जमा)	बख़्श देता है	बेशक अल्लाह	अल्लाह की रहमत	से	मायूस न हो तुम

اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٣﴾ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ

और फ़रमांबरदार हो जाओ उस के	अपना रब	तरफ़	और रुजूअ करो	53	मेहरबान	बख़्शने वाला	वही	बेशक वह

مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ

सब से बेहतर	और पैरवी करो	54	तुम मदद न किए जाओगे	फिर	अज़ाब	तुम पर आए	कि	इस से क़ब्ल

مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ

अज़ाब	कि तुम पर आए	इस से क़ब्ल	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़	जो नाज़िल की गई

بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى

उस पर	हाए अफ़्सोस	कोई शख़्स	कि कहे	55	तुम को शऊर (ख़बर) न हो	और तुम	अचानक

مَا فَرَّطْتُ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾

56	हँसी उड़ाने वाले	अलबत्ता-से	और यह कि मैं	अल्लाह की जनाब	में	जो मैं ने कोताही की

और उन पर बुरे काम ज़ाहिर हो जाएंगे जो वह करते थे और वह (अज़ाब) उन को घेर लेगा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (48)
फिर जब इन्सान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह हमें पुकारता है, फिर जब हम उस को अपनी तरफ़ से कोई नेमत अता करते हैं तो वह कहता है कि यह तो मुझे दिया गया है (मेरे) इल्म (की बिना) पर, (नहीं) बल्कि यह एक आज़माइश है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (49)
यक़ीनन यह उन लोगों ने (भी) कहा था जो इन से पहले थे, तो जो वह करते थे उस ने उन से (अज़ाब को) दूर न किया। (50)
पस उन्हें पहुँचें (उन पर आ पड़ें) बुराइयां जो उन्हों ने कमाई थीं, और इन में से जिन लोगों ने ज़ुल्म किया जल्द इन्हें पहुँचेंगी (इन पर आ पड़ेंगी) बुराइयां जो इन्हों ने कमाई हैं, और यह नहीं हैं (अल्लाह को) आजिज़ करने वाले। (51)
किया यह नहीं जानते कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ फ़राख़ कर देता है (और वह जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है, बेशक इस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान लाए। (52)
आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे बन्दो! जिन्हों ने ज़ियादती की है अपनी जानों पर, तुम अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है, बेशक वही बख़्शने वाला, मेहरबान है। (53)
और तुम अपने रब की तरफ़ रुजूअ करो, और उस के फ़रमांबरदार हो जाओ इस से क़ब्ल कि तम पर अज़ाब आ जाए, फिर तुम मदद न किए जाओगे। (54)
और पैरवी करो सब से बेहतर (किताब की) जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की गई है तुम्हारे रब की तरफ़ से, इस से क़ब्ल कि तुम पर अचानक अज़ाब आ जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो। (55)
कि कोई शख़्स कहे, हाए अफ़्सोस उस पर जो मैं ने अल्लाह के हक़ में कोताही की और यह कि मैं हँसी उड़ाने वालों में से रहा। (56)

اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٥٧﴾ اَوْ

या	57	परहेज़गार (जमा)	से	मैं ज़रूर होता	मुझे हिदायत देता	यह कि अल्लाह	अगर	वह कहे	या

تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ

से	तो मैं हो जाऊँ	दोबारा	मेरे लिए	काश अगर	अ़ज़ाब	देखे	जब	वह कहे

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ

और तू ने तकब्बुर किया	उन्हें	तू ने झुटलाया	मेरी आयात	तहक़ीक़ तेरे पास आईं	हाँ	58	नेकोकार (जमा)

وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٩﴾ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا

जिन लोगों ने झूट बोला	तुम देखोगे	और क़ियामत के दिन	59	काफ़िरों	से	और तू था

عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى

ठिकाना	जहन्नम	में	क्या नहीं	सियाह	उन के चेहरे	अल्लाह पर

لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٦٠﴾ وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۫

उन की कामयाबी के साथ	वह जिन्हों ने परहेज़गारी की	और नजात देगा अल्लाह	60	तकब्बुर करने वाले

لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۫

हर शै	पैदा करने वाला	अल्लाह	61	ग़मगीन होंगे	और न वह	बुराई	न छुएगी उन्हें

وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿٦٢﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

और ज़मीन	आस्मानों	उस के पास कुंजियां	62	निगहबान	चीज़	हर	पर	और वह

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٣﴾ ع قُلْ ع ٦ ١١ ٣

फ़रमा दें	63	ख़सारा पाने वाले	वह	वही लोग	अल्लाह की आयात के	मुन्किर हुए	और जो लोग

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ اُوْحِيَ

और यक़ीनन वहि भेजी गई है	64	जाहिलो	ऐ	मैं परस्तिश करूँ	तुम मुझे कहते हो	तो क्या अल्लाह के सिवा

اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ

तू ने शिर्क किया	अलबत्ता अगर	आप (स) से पहले	वह जो कि	और तरफ़	आप (स) की तरफ़

لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ اللّٰهَ

बल्कि अल्लाह	65	ख़सारा पाने वाले	से	और तू होगा ज़रूर	तेरे अ़मल	अलबत्ता अकारत जाएंगे

فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ

हक़	और उन्हों ने क़द्र शनासी न की अल्लाह की	66	शुक्र गुज़ारों	से	और हो	पस इबादत करो

قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ

और तमाम आस्मान	रोज़े क़ियामत	उस की मुट्ठी	तमाम	और ज़मीन	उस की क़द्र शनासी

مَطْوِيّٰتٌ ۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	वह शिर्क करते हैं	उस से जो	और बरतर	वह पाक है	उस के दाएं हाथ में	लिपटे हुए

या यह कहे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं ज़रूर परहेज़गारों में से होता। (57)
या जब वह अ़ज़ाब देखे तो कहे: काश! अगर मेरे लिए दोबारा (दुनिया में जाना हो) तो मैं नेकोकारों में से हो जाऊँ। (58)
(अल्लाह फ़रमाएगा) हाँ! तहक़ीक़ तेरे पास मेरी आयात आईं, तू ने उन्हें झुटलाया, और तू ने तकब्बुर किया, और तू काफ़िरों में से था। (59)
और क़ियामत के दिन तुम देखोगे जिन लोगों ने अल्लाह पर झूट बोला, उन के चेहरे सियाह होंगे, क्या तकब्बुर करने वालों का ठिकाना जहन्नम में नहीं? (60)
और जिन लोगों ने परहेज़गारी की, अल्लाह उन्हें उन को कामयाबी के साथ नजात देगा, न उन्हें कोई बुराई छुएगी, न वह ग़मगीन होंगे। (61)
अल्लाह हर शै का पैदा करने वाला है, और वह हर शै पर निगहबान है। (62)
उसी के पास हैं आस्मानों और ज़मीन की कुंजियां, और जो लोग अल्लाह की आयात से मुन्किर हुए वही ख़सारा पाने वाले हैं। (63)
आप (स) फ़रमा दें कि ऐ जाहिलो! क्या तुम मुझे कहते हो कि मैं अल्लाह के सिवा (किसी और) की परस्तिश करूँ। (64)
और यक़ीनन आप (स) की तरफ़ और आप (स) से पहलों की तरफ़ वहि भेजी गई है, अगर तुम ने शिर्क किया तो तुम्हारे अ़मल बिलकुल अकारत जाएंगे और तुम ज़रूर ख़सारा पाने वालों (ज़यां कारों) में से होगे। (65)
बल्कि तुम अल्लाह ही की इबादत करो, और शुक्र गुज़ारों में से हो। (66)
और उन्हों ने अल्लाह की क़द्र शनासी न की जैसा कि उस की क़द्र शनासी का हक़ था, और तमाम ज़मीन रोज़े क़ियामत उस की मुट्ठी में होगी, और तमाम आस्मान उस के दाएं हाथ में लिपटे होंगे, और वह उस से पाक और बरतर है जो वह शरीक करते हैं। (67)

وَنُفِخَ فِى الصُّوۡرِ فَصَعِقَ مَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنۡ فِى الۡاَرۡضِ

ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	तो बेहोश हो जाएगा	सूर में	और फूंक दी जाएगी

اِلَّا مَنۡ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيۡهِ اُخۡرٰى فَاِذَا هُمۡ قِيَامٌ يَّنۡظُرُوۡنَ ﴿۶۸﴾

68	देखने लगेंगे	खड़े	वह	तो फ़ौरन	दोबारा	फूंक मारी जाएगी उस में	फिर	चाहे अल्लाह	सिवाए जिसे

وَاَشۡرَقَتِ الۡاَرۡضُ بِنُوۡرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الۡكِتٰبُ وَجِآىۡءَ بِالنَّبِيّٖنَ

नबी (जमा)	और लाए जाएंगे	किताब	और रख दी जाएगी	अपने रब के नूर से	ज़मीन	और चमक उठेगी

وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ بِالۡحَقِّ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿۶۹﴾ وَوُفِّيَتۡ

और पूरा पूरा दिया जाएगा	69	ज़ुल्म न किया जाएगा	और वह (उन पर)	हक़ के साथ	उन के दरमियान	और फ़ैसला किया जाएगा	और गवाह (जमा)

ع كُلُّ نَفۡسٍ مَّا عَمِلَتۡ وَهُوَ اَعۡلَمُ بِمَا يَفۡعَلُوۡنَ ﴿۷۰﴾ ع وَسِيۡقَ

और हांके जाएंगे	70	जो कुछ वह करते हैं	खूब जानता है	और वह	जो उस ने किया (उस के आमाल)	हर शख़्स

الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوۡهَا فُتِحَتۡ

खोल दिए जाएंगे	वह आएंगे वहां	यहां तक कि जब	गिरोह दर गिरोह	जहन्नम	तरफ़	कुफ़्र किया (काफ़िर)	वह जिन्हों ने

اَبۡوَابُهَا وَقَالَ لَهُمۡ خَزَنَتُهَاۤ اَلَمۡ يَاۡتِكُمۡ رُسُلٌ مِّنۡكُمۡ

तु में से	रसूल (जमा)	क्या नहीं आए थे तुम्हारे पास	उस के मुहाफ़िज़	उन से	और कहेंगे	उस के दरवाज़े

يَتۡلُوۡنَ عَلَيۡكُمۡ اٰيٰتِ رَبِّكُمۡ وَيُنۡذِرُوۡنَكُمۡ لِقَآءَ يَوۡمِكُمۡ

तुम्हारा दिन	मुलाक़ात	और तुम्हें डराते थे	तुम्हारे रब की आयतें (अहकाम)	तुम पर	वह पढ़ते थे

هٰذَا ؕ قَالُوۡا بَلٰى وَلٰكِنۡ حَقَّتۡ كَلِمَةُ الۡعَذَابِ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۷۱﴾

71	काफ़िरों	पर	अ़ज़ाब	हुक्म	पूरा हो गया	और लेकिन	हाँ	वह कहेंगे	यह

قِيۡلَ ادۡخُلُوۡۤا اَبۡوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ۚ فَبِئۡسَ مَثۡوَى

ठिकाना	सो बुरा है	उस में	हमेशा रहने को	जहन्नम	दरवाज़े	तुम दाख़िल हो	कहा जाएगा

الۡمُتَكَبِّرِيۡنَ ﴿۷۲﴾ وَسِيۡقَ الَّذِيۡنَ اتَّقَوۡا رَبَّهُمۡ اِلَى الۡجَنَّةِ زُمَرًا ؕ

गिरोह दर गिरोह	जन्नत की तरफ़	अपना रब	वह डरे	वह लोग जो	ले जाया जाएगा	72	तकब्बुर करने वाले

حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوۡهَا وَفُتِحَتۡ اَبۡوَابُهَا وَقَالَ لَهُمۡ خَزَنَتُهَا

उस के मुहाफ़िज़	उन से	और कहेंगे	उस के दरवाज़े	और खोल दिए जाएंगे	वह वहां आएंगे	जब	यहां तक कि

سَلٰمٌ عَلَيۡكُمۡ طِبۡتُمۡ فَادۡخُلُوۡهَا خٰلِدِيۡنَ ﴿۷۳﴾ وَقَالُوا

और वह कहेंगे	73	हमेशा रहने को	सो इस में दाख़िल हो	तुम अच्छे रहे	तुम पर	सलाम

الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِىۡ صَدَقَنَا وَعۡدَهٗ وَاَوۡرَثَنَا الۡاَرۡضَ

ज़मीन	और हमें वारिस बनाया	अपना वादा	हम से सच्चा किया	वह जिस ने	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

نَتَبَوَّاُ مِنَ الۡجَنَّةِ حَيۡثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعۡمَ اَجۡرُ الۡعٰمِلِيۡنَ ﴿۷۴﴾

74	अ़मल करने वाले	अजर	सो किया ही अच्छा	हम चाहें	जहां	जन्नत	से- में	हम मुक़ाम करलें

और सूर में फूंक मारी जाएगी तो (हर कोई) जो आस्मानों और ज़मीन में है बेहोश हो जाएगा, सिवाए उस के जिसे अल्लाह चाहे, फिर उस में फूंक मारी जाएगी दोबारा, तो वह फ़ौरन खड़े हो कर (इधर उधर) देखने लगेंगे। (68)

और ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी और (आमाल की) किताब (खोल कर) रख दी जाएगी और नबी और गवाह लाए जाएंगे, और उन के दरमियान हक़ के साथ (ठीक ठीक) फ़ैसला किया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (69)

और हर शख़्स को उस के आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा, और वह खूब जानता है जो कुछ वह करते हैं। (70)

और काफ़िर हाँके जाएंगे गिरोह दर गिरोह जहन्नम की तरफ़, यहां तक कि जब वह वहां आएंगे तो उस के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उन से कहेंगे उस के मुहाफ़िज़ (दारोग़ा) क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल नहीं आए थे? जो तुम पर तुम्हारे रब के अहकाम पढ़ते थे, और तुम्हें डराते थे इस दिन की मुलाक़ात से। वह कहेंगे "हाँ" लेकिन काफ़िरों पर अ़ज़ाब का हुक्म पूरा हो गया। (71)

कहा जाएगा तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो, इस में हमेशा रहने को, सो बुरा है तकब्बुर करने वालों का ठिकाना। (72)

और जो लोग अपने रब से डरे उन्हें जन्नत की तरफ़ गिरोह दर गिरोह ले जाया जाएगा, यहां तक कि जब वह वहां आएंगे और खोल दिए जाएंगे उस के दरवाज़े, और उन से उस के मुहाफ़िज़ (दारोग़ा) कहेंगे कि तुम पर सलाम हो, तुम अच्छे रहे, सो इस में हमेशा रहने को दाख़िल हो। (73)

और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जिस ने अपना वादा सच्चा किया और हमें ज़मीन का वारिस बनाया कि हम मुक़ाम कर लें जन्नत में जहां हम चाहें, सो किया ही अच्छा है अ़मल करने वालों का अजर। (74)

وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ

तारीफ़ के साथ	पाकीज़गी बयान करते हुए	अ़र्श के गिर्द	से	हलक़ा बान्धे	फ़रिश्ते	और तुम देखोगे

رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٥﴾ ع ٥ / ٥ الربع

75	परवरदिगार सारे जहानों का	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	और कहा जाएगा	हक़ के साथ	उन के दरमियान	और फ़ैसला कर दिया जाएगा	अपना रब

آيَاتُهَا ٨٥ ❀ (٤٠) سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकूआत 9 — (40) सूरतुल मोमिन — आयात 85

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾ غَافِرِ الذَّنْۢبِ

गुनाह (जमा)	बख़्शने वाला	2	हर चीज़ का जानने वाला	ग़ालिब	अल्लाह से	किताब (क़ुरआन)	उतारा जाना	1	हा-मीम

وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ

उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	बड़े फ़ज़्ल वाला	शदीद अ़ज़ाब वाला	तौबा	और क़ुबूल करने वाला

اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया	मगर	अल्लाह की आयात	में	वह नहीं झगड़ते	3	लौट कर जाना	उसी की तरफ़

فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ﴿٤﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ

नूह (अ) की क़ौम	इन से क़ब्ल	झुटलाया	4	शहरों में	उन का चलना फिरना	सो तुम्हें धोके में न डाल दे

وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۠ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۢ بِرَسُوْلِهِمْ

अपने रसूल के मुतअ़ल्लिक़	हर उम्मत	और इरादा बान्धा	उन के बाद	और गिरोह (जमा)

لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۣ

तो मैं ने उन्हें पकड़ लिया	हक़	उस से	ताकि नाचीज़ कर दें, दबा दें	नाहक़	और झगड़ा करें	कि वह उसे पकड़ लें

فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى

पर	तुम्हारे रब की	बात	साबित हो गई	और इसी तरह	5	मेरा अ़ज़ाब	हुआ	सो कैसा

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٦﴾ اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وقف لازم / وقف النبی ﷺ ١٢

अ़र्श	उठाए हुए हैं	वह जो (फ़रिश्ते)	6	दोज़ख़ वाले	कि वह	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ

और मग़फ़िरत मांगते हैं	उस पर	और ईमान लाते हैं	अपना रब	तारीफ़ के साथ	वह पाकीज़गी बयान करते हैं	और जो उस के इर्द गिर्द

لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ

सो तू बख़्श दे	और इल्म	रहमत	हर शै	समो लिया है	ऐ हमारे रब	वह ईमान लाए	उन के लिए जो

لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٧﴾

7	जहन्नम	अ़ज़ाब	और तू उन्हें बचाले	तेरा रास्ता	और उन्हों ने पैरवी की	वह लोग जिन्हों ने तौबा की

और तुम देखोगे फ़रिश्तों को हलक़ा बान्धे अ़र्श के गिर्द, अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते हुए, उन के दरमियान हक़ के साथ (ठीक ठीक) फ़ैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा तमाम तारीफ़ें सारे जहानों के परवरदिगार अल्लाह के लिए हैं। (75)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

हा-मीम। (1)
इस क़ुरआन का उतारा जाना अल्लाह ग़ालिब, हर चीज़ के जानने वाले (की तरफ़) से है। (2)
गुनाहों को बख़्शने वाला, तौबा क़ुबूल करने वाला, शदीद अ़ज़ाब वाला, बड़े फ़ज़्ल वाला, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (3)
नहीं झगड़ते अल्लाह की आयात में, मगर वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया, सो तुम्हें धोके में न डाल दे उन की चलत फिरत दुनिया के मुल्कों में। (4)
उन से क़ब्ल नूह (अ) की क़ौम और उन के बाद (दूसरे) गिरोहों ने झुटलाया, और हर उम्मत ने अपने रसूलों के बारे में इरादा बान्धा कि वह उसे पकड़ लें, और नाहक़ झगड़ा करें ताकि उस से हक़ को दबा दें, तो मैं ने उन्हें पकड़ लिया, सो (देखो) कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब। (5)
और इसी तरह तुम्हारे रब की बात काफ़िरों पर साबित हो गई कि वह दोज़ख़ वाले हैं। (6)
जो फ़रिश्ते अ़र्श को उठाए हुए हैं और जो उस के इर्द गिर्द हैं वह तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते हैं अपने रब की, और वह उस पर ईमान लाते हैं, और ईमान लाने वालों के लिए मग़फ़िरत मांगते हैं कि ऐ हमारे रब! हर शै को समो लिया है (तेरी) रहमत और इल्म ने, सो तू उन लोगों को बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की, और तेरे रास्ते की पैरवी की, और तू उन्हें जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा ले। (7)

رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِیْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ

सालेह हैं	और जो	तू ने उन से वादा किया	वह जिन का	हमेशगी के बाग़ात	और उन्हें दाख़िल करना	ऐ हमारे रब

مِنْ اٰبَآىِٕهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ

ग़ालिब	तू ही	बेशक तू	और उन की औलाद	और उन की बीवियां	उन के बाप दादा	से

الْحَكِيْمُ ۙ﴿٨﴾ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ؕ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَىِٕذٍ

उस दिन	बुराइयों	बचा	और जो	बुराइयों	और तू उन्हें बचाले	8	हिक्मत वाला

ع ١ ٩ ٦ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया	बेशक	9	अज़ीम	कामयाबी	(यही) वह	और यह	तो यक़ीनन तू ने उस पर रहम किया

يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ

अपने तईं	तुम्हारा बेज़ार होना	से	बहुत बड़ा	अलबत्ता अल्लाह का बेज़ार होना	वह पुकारे जाएंगे

اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ﴿١٠﴾ قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا

तू ने हमें मुर्दा रखा	ऐ हमारे रब	वह कहेंगे	10	तो तुम कुफ़्र करते थे	ईमान की तरफ़	तुम बुलाए जाते थे	जब

اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى

तरफ़	तो क्या	अपने गुनाहों का	पस हम ने एतिराफ़ कर लिया	दो बार	और ज़िन्दगी बख़्शी हमें तू ने	दो बार

خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿١١﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗۤ اِذَا دُعِىَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ

वाहिद	पुकारा जाता अल्लाह	इस लिए कि जब	यह तुम (पर)	11	सबील	से-कोई	निकलना

كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ؕ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ﴿١٢﴾

12	बड़ा	बुलन्द	पस हुक्म अल्लाह के लिए	तुम मान लेते	उस का शरीक किया जाता	और अगर	तुम कुफ़्र करते

هُوَ الَّذِىْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ

रिज़्क़	आस्मानों से	तुम्हारे लिए	और उतारता है	अपनी निशानियां	तुम्हें दिखाता है	जो कि	वह

وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾ فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ

उस के लिए	ख़ालिस करते हुए	पस पुकारो अल्लाह	13	रुजूअ करता है	सिवाए जो	और नहीं नसीहत क़बूल करता

الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾ رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ

अर्श का मालिक	दरजे	बुलन्द	14	काफ़िर (जमा)	बुरा मानें	अगरचे	इबादत

يُلْقِى الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ

ताकि वह डराए	अपने बन्दों (में) से	वह चाहता है	जिस पर	अपने हुक्म से	वह डालता है रूह

يَوْمَ التَّلَاقِ ۙ﴿١٥﴾ يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह पर	न पोशीदा होंगी	ज़ाहिर होंगे	वह	जिस दिन	15	मुलाक़ात (क़ियामत) का दिन

مِنْهُمْ شَىْءٌ ؕ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ؕ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾

16	ज़बरदस्त क़हर वाला	वाहिद	अल्लाह के लिए	आज	बादशाहत	किस के लिए	कोई शै	उन से-की

ऐ हमारे रब! और उन्हें हमेशगी के बाग़ात में दाख़िल फ़रमा, वह जिन का तू ने उन से वादा किया है और (उन को भी) जो सालेह हैं उन के बाप दादा में से और उन की बीवियों और उन की औलाद में से, बेशक तू ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (8)

और उन्हें बुराइयों से बचाले और जो उस दिन बुराइयों से बचा, तो यक़ीनन तू ने उस पर रहम किया और यही अज़ीम कामयाबी है। (9)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह पुकारे जाएंगे (उन्हें पुकार कर कहा जाएगा) कि अल्लाह का बेज़ार होना तुम्हारे अपने तईं बेज़ार होने से बहुत बड़ा है, जब तुम ईमान की तरफ़ बुलाए जाते थे तो तुम कुफ़्र करते थे। (10)

वह कहेंगे ऐ हमारे रब! तू ने हमें मुर्दा रखा दो बार, और हमें ज़िन्दगी बख़्शी दो बार, पस हम ने अपने गुनाहों का एतिराफ़ कर लिया, तो क्या (अब यहां से) निकलने की कोई सबील है? (11)

कहा जाएगा यह तुम पर इस लिए (है) कि जब अल्लाह वाहिद को पुकारा जाता तो तुम कुफ़्र करते और अगर (किसी को) उस का शरीक किया जाता तो तुम मान लेते, पस हुक्म अल्लाह के लिए है जो बुलन्द, बड़ा है। (12)

वह जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, और तुम्हारे लिए आस्मान से रिज़्क़ उतारता है, और नसीहत क़बूल नहीं करता सिवाए जो (अल्लाह की तरफ़) रुजुअ करता है। (13)

पस तुम अल्लाह को पुकारो, उसी के लिए इबादत ख़ालिस करते हुए, अगरचे काफ़िर बुरा मानें। (14)

बुलन्द दरजों वाला, अर्श का मालिक, वह अपने हुक्म से रूह (वहि) डालता है (भेजता है) जिस पर अपने बन्दों में से चाहता है ताकि वह क़ियामत के दिन से डराए। (15)

जिस दिन वह ज़ाहिर होंगे, न पोशीदा होंगी अल्लाह पर उन की कोई शै, (निदा होगी) आज किस के लिए है बादशाहत? (एलान होगा) "अल्लाह के लिए" जो वाहिद, ज़बरदस्त क़हर वाला है। (16)

اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ۭ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	आज	नहीं ज़ुल्म	वह जो उस ने कमाया (आमाल)	हर शख़्स	बदला दिया जाएगा	आज

سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾ وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ

जब दिल (जमा)	क़रीब आने वाला रोज़ (क़ियामत)	और आप (स) उन्हें डराएं	17	हिसाब लेने वाला	तेज़

لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ۭ۬ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ

और न कोई सिफ़ारिश करने वाला	दोस्त	से - कोई	नहीं ज़ालिमों के लिए	ग़म से भरे हुए	गलों के नज़्दीक

يُّطَاعُ ﴿١٨﴾ۭ يَعْلَمُ خَاۗىِٕنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ ﴿١٩﴾

19	सीने (जमा)	छुपाते हैं	और जो कुछ	आँखों	ख़ियानत	वह जानता है	18	जिस की बात मानी जाए

وَاللّٰهُ يَقْضِيْ بِالْحَقِّ ۭ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

उस के सिवा	पुकारते हैं	और जो लोग	हक़ के साथ	फ़ैसला करता है	और अल्लाह

لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٢٠﴾ۧ اَوَلَمْ ع ١١ ٢

क्या नहीं	20	देखने वाला	सुनने वाला	वही	बेशक अल्लाह	कुछ भी	नहीं फ़ैसले करते

يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ

उन लोगों का जो	अन्जाम	हुआ	कैसा	तो वह देखते	ज़मीन में	वह चले फिरे

كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا

और आसार	कुव्वत	इन से	ज़ियादा सख़्त	वह	वह थे	इन से पहले	थे

فِي الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۭ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

अल्लाह से	उन के लिए	है	और नहीं	उन के गुनाहों के सबब	तो उन्हें पकड़ा अल्लाह	ज़मीन में

مِنْ وَّاقٍ ﴿٢١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ

खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	उन के पास आते थे	इस लिए कि वह	यह	21	बचाने वाला	से - कोई

فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ۭ اِنَّهٗ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾

22	सख़्त अज़ाब वाला	क़व्वी	बेशक वह	पस पकड़ा उन्हें अल्लाह	तो उन्हों ने कुफ़्र किया

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٣﴾ۙ اِلٰى فِرْعَوْنَ

फ़िरऔन की तरफ़	23	रोशन	और सनद	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने भेजा

وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾ فَلَمَّا جَاۗءَهُمْ

वह आए उन के पास	फिर जब	24	बड़ा झूटा	जादूगर	तो उन्हों ने कहा	और क़ारून	और हामान

بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْٓا اَبْنَاۗءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ

उस के साथ	ईमान लाए	वह जो	उन के बेटे	तुम क़त्ल करो	उन्हों ने कहा	हमारे पास (तरफ़) से	हक़ के साथ

وَاسْتَحْيُوْا نِسَاۗءَهُمْ ۭ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٢٥﴾

25	गुमराही में	सिवाए	काफ़िरों	और नहीं दाओ	उन की औरतें (बेटियां)	और ज़िन्दा रहने दो

आज हर शख़्स को उस के आमाल का बदला दिया जाएगा, आज कोई ज़ुल्म न होगा, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (17)

और उन्हें क़रीब आने वाले रोज़े क़ियामत से डराएं, जब दिल ग़म से भरे गलों के नज़्दीक (कलेजे मुँह को) आ रहे होंगे। ज़ालिमों के लिए नहीं कोई दोस्त, न कोई सिफ़ारिश करने वाला, जिस की बात मानी जाए। (18)

वह जानता है आँखों की ख़ियानत और जो वह सीनों में छुपाते हैं। (19)

और अल्लाह हक़ के साथ फ़ैसला करता है, और जो लोग उस के सिवा पुकारते हैं वह कुछ भी फ़ैसले नहीं करते, बेशक अल्लाह ही सुनने वाला, देखने वाला है। (20)

क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देखते कैसा अन्जाम हुआ उन लोगों का जो उन से पहले थे, वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा सख़्त थे, और ज़मीन में आसार (निशानियों के एतिबार से भी), तो अल्लाह ने उन्हें गुनाहों के सबब पकड़ा, और उन के लिए नहीं है कोई अल्लाह से बचाने वाला। (21)

इस लिए कि उन के पास उन के रसूल खुली निशानियां ले कर आते थे, तो उन्हों ने कुफ़्र किया, पस उन्हें अल्लाह ने पकड़ा, बेशक वह क़व्वी, सख़्त अज़ाब देने वाला है। (22)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को भेजा अपनी निशानियों और रोशन सनद के साथ। (23)

फ़िरऔन और हामान और क़ारून की तरफ़ तो उन्हों ने कहा (मूसा अ तो) जादूगर, बड़ा झूटा है। (24)

फिर जब वह उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ के साथ आए, तो उन्हों ने कहा: उन के बेटों को क़त्ल कर डालो जो उस के साथ ईमान लाए, और उन की बेटियों को ज़िन्दा रहने दो, और काफ़िरों का दाओ गुमराही के सिवा (कुछ) नहीं। (25)

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ

अपना रब	और उसे पुकारने दो	मूसा (अ)	मैं क़त्ल करूँ	मुझे छोड़ दो	फ़िरऔन	और कहा

اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन में	यह कि ज़ाहिर कर दे (फैला दे)	या	तुम्हारा दीन	कि वह बदल दे	बेशक मैं डरता हूँ

الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾ وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ

और तुम्हारे रब से-की	अपने रब से-की	पनाह ले ली	बेशक मैं	मूसा (अ)	और कहा	26	फ़साद

ع ٣ ٧ ٨ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾ وَقَالَ رَجُلٌ

एक मर्द	और कहा	27	रोज़े हिसाब पर	(जो) ईमान नहीं रखता	मग़रूर	हर	से

مُّؤْمِنٌ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا

एक आदमी	क्या तुम क़त्ल करते हो	अपना ईमान	वह छुपाए हुए था	फ़िरऔन के लोग	से	मोमिन

اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ۭ

तुम्हारे रब की तरफ़ से	खुली निशानियों के साथ	और वह तुम्हारे पास आया है	मेरा रब अल्लाह	कि वह कहता है

وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ

तुम्हें पहुँचेगा	सच्चा	और अगर है वह	उस का झूट	तो उस पर	झूटा	वह है	और अगर

بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ

हद से गुज़रने वाला	जो हो	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	तुम से वादा करता है	वह जो	कुछ

كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन में	ग़ालिब	आज	बादशाहत	तुम्हारे लिए	ऐ मेरी क़ौम	28	सख़्त झूटा

فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ۭ قَالَ فِرْعَوْنُ

फ़िरऔन	कहा	अगर वह आ जाए हम पर	अल्लाह का अ़ज़ाब	से	हमारी मदद करेगा	तो कौन

مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾

29	भलाई	राह	मगर	और राह नहीं दिखाता तुम्हें	जो मैं देखता हूँ	मैं दिखाता (राए देता) तुम्हें मगर	नहीं

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ

मानिंद	तुम पर	मैं डरता हूँ	ऐ मेरी क़ौम	ईमान ले आया	वह शख़्स जो	और कहा

يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣٠﴾ مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ

और समूद	और आद	क़ौमे नूह	हाल	जैसे	30	(साबिक़ा) गिरोहों का दिन

وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۭ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾

31	अपने बन्दों के लिए	कोई ज़ुल्म	चाहता	अल्लाह	और नहीं	उन के बाद	और जो लोग

وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾

32	दिन चीख़ ओ पुकार	तुम पर	मैं डरता हूँ	और ऐ मेरी क़ौम

और फ़िरऔन ने कहाः मुझे छोड़ दो कि मैं मूसा (अ) को क़त्ल कर दूँ और उसे अपने रब को पुकारने दो, बेशक मैं डरता हूँ कि वह बदल देगा तुम्हारा दीन या ज़मीन में फ़साद फैलाएगा। (26)

और मूसा (अ) ने कहा, बेशक मैं ने पनाह ले ली है अपने और तुम्हारे रब की, हर मग़रूर से जो रोज़े हिसाब पर ईमान नहीं रखता। (27)

और कहा फ़िरऔन के लोगों में से एक मोमिन मर्द ने (जो) अपना ईमान छुपाए हुए था, क्या तुम एक आदमी को (महज़ इस बात पर) क़त्ल करते हो कि वह कहता है "मेरा रब अल्लाह है" और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली निशानियों के साथ आया है और अगर वह झूटा है तो उस के झूट (का वबाल) उसी पर होगा, और अगर वह सच्चा है तो वह जो तुम से वादा कर रहा हे उस का कुछ (अ़ज़ाब) तुम पर (ज़रूर) पहुँचेगा, बेशक अल्लाह (उसे) हिदायत नहीं देता जो हद से गुज़रने वाला, सख़्त झूटा। (28)

ऐ मेरी क़ौम आज बादशाहत तुम्हारी है, तुम ग़ालिब हो ज़मीन में, अगर अल्लाह का अ़ज़ाब हम पर आ जाए तो उस से बचाने के लिए कौन हमारी मदद करेगा? फ़िरऔन ने कहा, मैं तुम्हें राए नहीं देता मगर जो मैं देखता हूँ, और मैं तुम्हें राह नहीं दिखाता मगर भलाई की राह। (29)

और उस शख़्स ने कहा जो ईमान ले आया था, ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम पर साबिक़ा गिरोहों के दिन के मानिंद (अ़ज़ाब नाज़िल होने से) डरता हूँ, (30)

जैसे हाल हुआ क़ौमे नूह और आ़द और समूद का और जो उन के बाद (हुए) और अल्लाह नहीं चाहता अपने बन्दों के लिए कोई ज़ुल्म। (31)

और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम पर चीख़ ओ पुकार के दिन से डरता हूँ। (32)

يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ

गुमराह कर दे	और जिस को	बचाने वाला	कोई	अल्लाह से	नहीं तुम्हारे लिए	पीठ फेर कर	तुम फिर जाओगे (भागोगे)	जिस दिन

اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ

इस से क़ब्ल	यूसुफ़ (अ)	और तहक़ीक़ आए तुम्हारे पास	33	कोई हिदायत देने वाला	तो नहीं उस के लिए	अल्लाह

بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ

तुम ने कहा	वह फ़ौत हो गए	जब	यहां तक	आए तुम्हारे पास जिस के साथ	शक में उस से	सो तुम हमेशा रहे	(वाज़ेह) दलाइल के साथ

لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ

जो वह	गुमराह करता है अल्लाह	इसी तरह	कोई रसूल	उस के बाद	हरगिज़ न भेजेगा अल्लाह

مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ﴿٣٤﴾ ۚ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ

बग़ैर किसी दलील	अल्लाह की आयतें	में	झगड़ा करते हैं	जो लोग	34	शक में रहने वाला	हद से गुज़रने वाला

اَتٰىهُمْ ؕ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ

मुहर लगा देता है अल्लाह	इसी तरह	ईमान लाए	उन लोगों के जो	और नज़्दीक	अल्लाह के नज़्दीक	सख़्त ना पसंद	आई उन के पास

عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ

बना दे तो	ऐ हामान	फ़िरऔन	और कहा	35	सरकश	मग़रूर	हर दिल	पर

لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْۤ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ

पस झाँक लूँ	आस्मानों	रास्ते	36	रास्ते	पहुँच जाऊँ	शायद कि मैं	एक (बुलन्द) महल	मेरे लिए

اِلٰۤى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ؕ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ

फ़िरऔन को	आरास्ता दिखाए गए	और उसी तरह	झूटा	उसे अलबत्ता गुमान करता हूँ	और बेशक मैं	मूसा (अ) का माबूद	तरफ़, को

سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾ ع ١٠ ٩

37	मगर (सिर्फ़) तबाही में	फ़िरऔन	और नहीं तदबीर	सीधा रास्ता	से	और वह रोक दिया गया	उस के बुरे अ़मल

وَقَالَ الَّذِيْۤ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾ ۚ

38	भलाई	रास्ता	मैं तुम्हें राह दिखाऊँगा	तुम मेरी पैरवी करो	ऐ मेरी क़ौम	वह जो ईमान ले आया था	और कहा

يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۫ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ

वह	आख़िरत	और बेशक	(थोड़ा) फ़ाइदा	दुनिया की ज़िन्दगी	यह	इस के सिवा नहीं	ऐ मेरी क़ौम

دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰۤى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ

और जो-जिस	उसी जैसा	मगर	उसे बदला न दिया जाएगा	बुरा	अ़मल किया	जो-जिस	39	(हमेशा) रहने का घर

عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ

तो यही लोग	और (बशर्ते यह कि) वह मोमिन	या औ़रत	मर्द	से	अच्छा	अ़मल किया

يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾

40	बे हिसाब	उस में	वह रिज़्क़ दिए जाएंगे	जन्नत	दाख़िल होंगे

जिस दिन तुम भागोगे पीठ फेर कर, तुम्हारे लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा, और जिस को अल्लाह गुमराह करदे उस के लिए कोई नहीं हिदायत देने वाला। (33)

और तहक़ीक़ तुम्हारे पास इस से क़ब्ल यूसुफ़ (अ) वाज़ेह दलाइल के साथ आए, सो तुम हमेशा शक में रहे उस (के बारे में) जिस के साथ वह तुम्हारे पास आए, यहां तक कि जब वह फ़ौत हो गए तो तुम ने कहाः उस के बाद अल्लाह हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा, इसी तरह अल्लाह (उसे) गुमराह करता है जो हद से गुज़रने वाला, शक में रहने वाला हो। (34)

जो लोग अल्लाह की आयतों (के बारे) में झगड़ते हैं किसी दलील के बग़ैर जो उन के पास हो (उन की यह कज बह्सी) सख़्त ना पसंद है अल्लाह के नज़्दीक और उन के नज़्दीक जो ईमान लाए, इसी तरह अल्लाह हर मग़रूर, सरकश के दिल पर मुहर लगा देता है। (35)

और फ़िरऔन ने कहा ऐ हामान! मेरे लिए बुलन्द इमारत बना, शायद कि मैं पहुँच जाऊँ। (36)

आस्मानों के रास्ते, पस मैं मूसा (अ) के माबूद को झाँक लूँ, और बेशक मैं उसे झूटा गुमान करता हूँ, और उसी तरह फ़िरऔन को उस के बुरे अ़मल आरास्ता दिखाए गए और वह रोक दिया गया सीधे रास्ते से, और फ़िरऔन की तदबीर सिर्फ़ तबाही ही थी। (37)

और जो शख़्स ईमान ले आया था, उस ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम्हें भलाई का रास्ता दिखाऊँगा। (38)

ऐ मेरी क़ौम! इस के सिवा नहीं कि यह दुनिया की ज़िन्दगी थोड़ा सा फ़ाइदा है, और आख़िरत बेशक हमेशा रहने का घर है। (39)

जिस शख़्स ने बुरा अ़मल किया उसे उस जैसा बदला दिया जाएगा, और जिस ने अच्छा अ़मल किया, वह ख़ाह मर्द हो या औ़रत, बशर्ते यह कि वह मोमिन हो, तो यही लोग दाख़िल होंगे जन्नत में, उस में उन्हें बे हिसाब रिज़्क़ दिया जाएगा। (40)

النصف

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾

41	आग (जहन्नम)	तरफ़	और बुलाते हो तुम मुझे	नजात	तरफ़	मैं बुलाता हूँ तुम्हें	क्या हुआ मुझे	और ऐ मेरी क़ौम

تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ز

कोई इल्म	उस का	मुझे	नहीं	जो	उस के साथ	और मैं शरीक ठहराऊँ	अल्लाह का	कि मैं इन्कार करूँ	तुम बुलाते हो मुझे

وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ

तमु बुलाते हो मुझे	यह कि	कोई शक नहीं	42	बख़्शने वाला	ग़ालिब	तरफ़	बुलाता हूँ तुम्हें	और मैं

اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَآ

फिर जाना है हमें	और यह कि	आख़िरत में	और न	दुनिया में	बुलाना	नहीं उस के लिए	उस की तरफ़

اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾ فَسَتَذْكُرُوْنَ

सो तुम जल्द याद करोगे	43	आग वाले (जहन्नमी)	वह-वही	हद से बढ़ने वाले	और यह कि	अल्लाह की तरफ़

مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ط وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ط اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ

देखने वाला	बेशक अल्लाह	अल्लाह को	अपना काम	और मैं सौंपता हूँ	तुम्हें	जो मैं कहता हूँ

بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ

और घेर लिया	दाओ जो वह करते थे	बुराइयां	सो उसे बचा लिया अल्लाह ने	44	बन्दों को

بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾ ج اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا

उस पर	वह हाज़िर किए जाते हैं	आग	45	बुरा अज़ाब	फ़िरऔन वालों को

غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ج وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ قف اَدْخِلُوْٓا

दाख़िल करो तुम	क़ियामत	क़ाइम होगी	और जिस दिन	और शाम	सुबह

اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾ وَاِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ

आग (जहन्नम) में	वह बाहम झगड़ेंगे	और जब	46	अज़ाब	शदीद तरीन	फ़िरऔन वाले

فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ

तुम्हारे	बेशक हम थे	वह बड़े बनते थे	उन लोगों को जो	कमज़ोर	तो कहेंगे

تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾

47	आग	से-का	कुछ हिस्सा	हम से	दूर कर दोगे	तुम	तो क्या	ताबे

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ

फ़ैसला कर चुका है	बेशक अल्लाह	इस में	सब	बेशक हम	बड़े बनते थे	वह लोग जो	कहेंगे

بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ

जहन्नम	निगहबान दारोग़ा (जमा) को	आग में	वह लोग जो	और कहेंगे	48	बन्दों के दरमियान

ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾

49	से-का अज़ाब	एक दिन	हम से	हल्का कर दे	अपने रब से	तुम दुआ करो

और ऐ मेरी क़ौम! यह क्या बात है कि मैं तुम्हें नजात की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम मुझे जहन्नम की तरफ़ बुलाते हो। (41) तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह का इन्कार करूँ और उस के साथ उसे शरीक ठहराऊँ जिस का मुझे कोई इल्म नहीं और मैं तुम्हें ग़ालिब बख़्शने वाले (अल्लाह) की तरफ़ बुलाता हूँ। (42) कोई शक नहीं कि तुम मुझे जिस की तरफ़ बुलाते हो उस का दुनिया में और आख़िरत में (कुछ भी) नहीं और यह कि हमें फिर जाना है अल्लाह की तरफ़, और यह कि हद से बढ़ जाने वाले ही जहन्नमी हैं। (43) सो तुम जल्दी याद करोगे जो मैं तुम्हें कहता हूँ और मैं अपना काम (मामला) अल्लाह को सौंपता हूँ, बेशक अल्लाह बन्दों को देखने वाला है। (44) सो अल्लाह ने उसे बचा लिया (उन) बुरे दाओ से जो वह करते थे, और फ़िरऔन वालों को बुरे अज़ाब ने घेर लिया। (45) (जहन्नम की) आग जिस पर वह सुबह ओ शाम पेश किए जाते हैं, और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी (हुक्म होगा कि) तुम दाख़िल करो फ़िरऔन वालों को शदीद तरीन अज़ाब में। (46) और जब वह जहन्नम में बाहम झगड़ेंगे तो कहेंगे कमज़ोर उन लोगों को जो बड़े बनते थेः बेशक हम (दुनिया में) तुम्हारे मातहत थे तो क्या (अब) तुम दूर कर दोगे हम से आग का कुछ हिस्सा? (47) वह लोग जो बड़े बनते थे कहेंगेः बेशक हम सब इस में हैं, बेशक अल्लाह बन्दों के दरमियान फ़ैसला कर चुका है। (48) और वह लोग जो आग में होंगे वह कहेंगे दारोग़ों (जहन्नम के निगहबान फ़रिश्तों) कोः अपने रब से दुआ करो, एक दिन का अज़ाब हम से हल्का कर दे। (49)

قَالُوْٓا اَوَ لَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ قَالُوْا بَلٰى ؕ

हाँ	वह कहेंगे	निशानियों के साथ	तुम्हारे रसूल	तुम्हारे पास आते	क्या नहीं थे	वह कहेंगे

قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٥٠﴾ ع ٥ ١٣ ١٠

50	गुमराही में (बेसूद)	मगर	काफ़िर (जमा)	पुकार	और न	तो तुम पुकारो	वह कहेंगे

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

दुनिया	ज़िन्दगी	में	ईमान लाए	और जो लोग	अपने रसूल (जमा)	ज़रूर मदद करते हैं	बेशक हम

وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ﴿٥١﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ

ज़ालिम (जमा)	नफ़ा न देगी	जिस दिन	51	गवाही देने वाले	खड़े होंगे	और जिस दिन

مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا

और तहक़ीक़ हम ने दी	52	बुरा घर (ठिकाना)	और उन के लिए	लानत	और उन के लिए	उन की उज़्र ख़ाही

مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ﴿٥٣﴾

53	किताब (तौरेत)	बनी इस्राईल	और हम ने वारिस बनाया	हिदायत	मूसा (अ)

هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٥٤﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

अल्लाह का वादा	बेशक	पस आप (स) सब्र करें	54	अक़्ल मन्दों के लिए	और नसीहत	हिदायत

حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ

अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ	और पाकीज़गी बयान करें	अपने गुनाहों के लिए	और मग़्फ़िरत तलब करें	सच्चा

بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٥٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ

अल्लाह की आयात	में	झगड़ते हैं	वह लोग जो	बेशक	55	और सुबह	शाम

بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ

तकब्बुर	सिवाए	उन के सीने (दिल)	में	नहीं	उन के पास आई हो	किसी सनद	बग़ैर

مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ

वही सुनने वाला	बेशक वह	अल्लाह की	पस आप (स) पनाह चाहें	उस तक पहुँचने वाले	नहीं वह

الْبَصِيْرُ ﴿٥٦﴾ لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ

से	बहुत बड़ा	और ज़मीन	आस्मानों	यक़ीनन पैदा करना	56	देखने वाला

خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	जानते (समझते) नहीं	अक्सर लोग	और लेकिन	लोगों को पैदा करना

وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और जो लोग ईमान लाए	और बीना	नाबीना	और बराबर नहीं

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾

58	जो तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करते हो	बहुत कम	और न बदकार	और उन्हों ने अच्छे अमल किए

वह कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुली निशानियों के साथ नहीं आए थे? वह कहेंगे हाँ! वह कहेंगे तो तुम पुकारो, और न होगी काफ़िरों की पुकार मगर बेसूद। (50)

बेशक हम ज़रूर मदद करते हैं अपने रसूलों की और उन लोगों की जो ईमान लाए दुनिया की ज़िन्दगी में और (उस दिन भी) जिस दिन गवाही देने वाले खड़े होंगे। (51)

जिस दिन ज़ालिमों को नफ़ा न देगी उन की उज़्र ख़ाही, और उन के लिए लानत (अल्लाह की रहमत से दूरी) है और उन के लिए बुरा घर है। (52)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को हिदायत (तौरेत) दी और हम ने बनी इस्राईल को तौरेत का वारिस बनाया। (53)

(जो) अक़्ल मन्दों के लिए हिदायत और नसीहत है। (54)

पस आप (स) सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, और अपने क़ुसूरों के लिए मग़्फ़िरत तलब करें, और अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करें शाम और सुबह। (55)

बेशक जो लोग अल्लाह की आयात में झगड़ते हैं बग़ैर किसी सनद के, जो उन के पास आई हो, उन के दिलों में तकब्बुर (बड़ाई की हवस) के सिवा कुछ नहीं, जिस तक वह कभी पहुँचने वाले नहीं। पस आप अल्लाह की पनाह चाहें, बेशक वही सुनने वाला देखने वाला है। (56)

यक़ीनन आस्मानों का और ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने से बहुत बड़ा है, लेकिन अक्सर लोग समझते नहीं। (57)

और बराबर नहीं नाबीना और बीना, और (न) वह जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अमल किए, और न वह जो बदकार हैं। बहुत कम तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करते हो। (58)

إِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

लोग	अक्सर	और लेकिन	इस में	नहीं शक	ज़रूर आने वाली	क़ियामत	बेशक

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ

तुम्हारी	मैं क़ुबूल करूँगा	तुम दुआ करो मुझ से	तुम्हारे रब ने	और कहा	59	ईमान नहीं लाते

اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ

जहन्नम	अ़नक़रीब वह दाख़िल होंगे	मेरी इबादत	से	तकब्बुर करते हैं	जो लोग	बेशक

ع ١٠/٦ ١١ دٰخِرِيْنَ ﴿٦٠﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ

उस में	ताकि तुम सुकून हासिल करो	रात	तुम्हारे लिए	बनाई	वह जिस ने	अल्लाह	60	ख़ार हो कर

وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ

लोगों पर	फ़ज़्ल वाला	बेशक अल्लाह	दिखाने को	और दिन

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ

पैदा करने वाला	तुम्हारा रब	अल्लाह	यह है	61	शुक्र नहीं करते	अक्सर लोग	और लेकिन

كُلِّ شَيْءٍ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾ كَذٰلِكَ

इसी तरह	62	उलटे फिरे जाते हो	तो कहां तुम	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	हर शै

يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اَللّٰهُ

अल्लाह	63	वह इन्कार करते हैं	अल्लाह की आयात से-का	थे	वह लोग जो	उलटे फिर जाते हैं

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ

और तुम्हें सूरत दी	छत	और आस्मान	क़रारगाह	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	वह जिस ने

فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ذٰلِكُمُ

यह है	पाकीज़ा चीज़ें	से	और तुम्हें रिज़्क़ दिया	तुम्हें सूरत दी	तो बहुत ही हसीन

اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ هُوَ

वही	64	परवरदिगार सारे जहानों का	सो बरकत वाला है अल्लाह	अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार

الْحَيُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ

उस के लिए दीन	ख़ालिस कर के	पस तुम पुकारो उसे	सिवाए उस के	नहीं कोई माबूद	ज़िन्दा रहने वाला

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾ قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ

कि परस्तिश करूँ मैं	मुझे मना कर दिया गया है	बेशक मैं	आप (स) फ़रमा दें	65	परवरदिगार सारे जहानों का	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ

खुली निशानियां	वह मेरे पास आ गईं	जब	अल्लाह के सिवा	तुम पूजा करते हो	वह जिन की

مِنْ رَّبِّيْ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٦﴾

66	परवरदिगार के लिए तमाम जहानों का	कि मैं अपनी गर्दन झुका दूँ	और मुझे हुक्म दिया गया	मेरे रब से

बेशक क़ियामत ज़रूर आने वाली है, इस में कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (59)

और तुम्हारे रब ने कहा: तुम मुझ से दुआ करो, मैं तुम्हारी (दुआ) क़ुबूल करूँगा, बेशक जो लोग मेरी इबादत से तकब्बुर (सरताबी) करते हैं अ़नक़रीब ख़ार हो कर वह जहन्नम में दाख़िल होंगे। (60)

अल्लाह वह है जिस ने बनाई तुम्हारे लिए रात ताकि तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन दिखाने को (रोशन बनाया), बेशक अल्लाह फ़ज़्ल वाला है लोगों पर और लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (61)

यह है अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार, हर शै का पैदा करने वाला, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो तुम कहां उलटे फिरे जाते हो? (62)

इसी तरह वह लोग उलटे फिर जाते हैं जो अल्लाह की आयात का इन्कार करते हैं। (63)

अल्लाह, जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को क़रारगाह बनाया और आस्मान को छत (बनाया) और तुम्हें सूरत दी तो बहुत ही हसीन सूरत दी, और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया, यह है अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार, सो बरकत वाला है अल्लाह, सारे जहां का परवरदिगार। (64)

वही ज़िन्दा रहने वाला है, नहीं कोई माबूद उस के सिवा, पस तुम उसी को पुकारो उस के लिए दीन ख़ालिस करके, तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, सारे जहान का परवरदिगार। (65)

आप (स) फ़रमा दें: बेशक मुझे मना कर दिया गया है कि मैं उन की परस्तिश करूँ जिन की तुम अल्लाह के सिवा पूजा करते हो, जब मेरे पास आ गईं मेरे रब (की तरफ़) से खुली निशानियां, और मुझे हुक्म दिया गया है कि तमाम जहानों के परवरदिगार के लिए अपनी गर्दन झुका दूँ, (66)

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ

लोथड़े से	फिर	नुत्फ़े से	फिर	मिट्टी से	पैदा किया तुम्हें	वह जिस ने

ثُمَّ یُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُیُوْخًا ۚ

बूढ़े	ताकि तुम हो जाओ	फिर	अपनी जवानी	ताकि तुम पहुँचो	फिर	बच्चा सा	तुम्हें निकालता है वह	फिर

وَمِنْكُمْ مَّنْ یُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ

और ताकि तुम	वक़्ते मुक़र्ररा	और ताकि तुम पहुँचो	उस से क़ब्ल	जो फ़ौत हो जाता है	और तुम में से

تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ هُوَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا

तो इस के सिवा नहीं	किसी अमर	वह फ़ैसला करता है	फिर जब	और मारता है	ज़िन्दगी अ़ता करता है	वही है जो	67	समझो

ع ٨ ١٢

یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿٦٨﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ یُجَادِلُوْنَ فِیْٓ

में	झगड़ते हैं	जो लोग	तरफ़	क्या नहीं देखा तुम ने	68	सो वह हो जाता है	हो जा	वह कहता है उस के लिए

اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰى یُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ

औ उस को जो	किताब को	झुटलाया	जिन लोगों ने	69	फिरे जाते हैं	कहां	अल्लाह की आयात

معانقة ١٣ عند المتأخرين ١٢

اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۫ فَسَوْفَ یَعْلَمُوْنَ ﴿٧٠﴾ اِذِ الْاَغْلٰلُ

तौक़ (जमा)	जब	70	वह जान लेंगे	पस जल्द	अपने रसूल	उस के साथ	हम ने भेजा

فِیْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ؕ یُسْحَبُوْنَ ﴿٧١﴾ فِی الْحَمِیْمِ ۙ ثُمَّ

फिर	खौलते हुए पानी में	71	वह घसीटे जाएंगे	और ज़न्जीरें	उन की गर्दनों में

فِی النَّارِ یُسْجَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ ثُمَّ قِیْلَ لَهُمْ اَیْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٣﴾

73	शरीक करते	जिन को तुम थे	कहां	उन को	कहा जाएगा	फिर	72	वह झोंक दिए जाएंगे	आग में

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا

पुकारते थे हम	नहीं	बल्कि	हम से	वह गुम हो गए	वह कहेंगे	अल्लाह के सिवा

مِنْ قَبْلُ شَیْـًٔا ؕ كَذٰلِكَ یُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِیْنَ ﴿٧٤﴾ ذٰلِكُمْ بِمَا

उस का बदला जो	यह	74	काफ़िरों	गुमराह करता है अल्लाह	इसी तरह	कोई चीज़	इस से क़ब्ल

كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ﴿٧٥﴾

75	इतराते	तुम थे	और बदला उस का जो	नाहक़	ज़मीन में	तुम खुश होते थे

اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى

ठिकाना	सो बुरा	उस में	हमेशा रहने को	जहन्नम	दरवाज़े	तुम दाखिल हो जाओ

الْمُتَكَبِّرِیْنَ ﴿٧٦﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِیَنَّكَ

हम आप (स) को दिखा दें	पस अगर	सच्चा	अल्लाह का वादा	बेशक	आप सब्र करें	76	तकब्बुर करने (बड़ा बनने) वालों का

بَعْضَ الَّذِیْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّیَنَّكَ فَاِلَیْنَا یُرْجَعُوْنَ ﴿٧٧﴾

77	वह लौटाए जाएंगे	पस हमारी तरफ़	हम आप (स) को वफ़ात दे दें	या	हम उन से वादा करते हैं	वह जो	बाज़ (कुछ हिस्सा)

वह जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर लोथड़े से, फिर वह तुम्हें निकालता है (माँ के पेट से) बच्चा सा, फिर (तुम्हें बाक़ी रखता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो, फिर (ज़िन्दा रखता है) ताकि तुम बूढ़े हो जाओ और तुम में से (कोई है) जो फ़ौत हो जाता है उस से क़ब्ल, और ताकि तुम सब (अपने अपने) वक़्ते मुक़र्ररा को पहुँचो और ताकि तुम समझो। (67)

वही है जो ज़िन्दगी अ़ता करता है और मारता है, फिर जब वह किसी अमर का फ़ैसला करता है तो उस के सिवा नहीं कि वह उस को कहता है "हो जा" सो वह हो जाता है। (68)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयात में झगड़ते हैं? वह कहां फिरे जाते (भटकते) हैं? (69)

जिन लोगों ने किताब को झुटलाया और उसे जिस के साथ हम ने अपने रसूलों को भेजा, पस वह जल्द जान लेंगे। (70)

जब उन की गर्दनों में तौक़ और ज़न्ज़ीरें होंगी, वह घसीटे जाएंगे। (71)

खौलते हुए पानी में, फिर वह आग (जहन्नम) में झोंक दिए जाएंगे। (72)

फिर कहा जाएगा उन को, कहां हैं वह जिन को तुम अल्लाह के सिवा शरीक करते थे? (73)

वह कहेंगे वह तो हम से गुम हो गए (कहीं नज़र नहीं आते) बल्कि हम तो इस से क़ब्ल किसी चीज़ को पुकारते ही न थे, इसी तरह अल्लाह काफ़िरों को गुमराह करता है। (74)

यह उस का बदला है जो तुम ज़मीन में नाहक़ खुश होते (फिरते) थे, और बदला है उस का जिस पर तुम इतराते थे। (75)

तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उस में रहने को, सो बड़ा बनने वालों का बुरा है ठिकाना। (76)

पस आप (स) सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, पस अगर हम आप को उस (अ़ज़ाब) का कुछ हिस्सा दिखा दें जो हम उन से वादा करते हैं या (उस से क़ब्ल) हम आप को वफ़ात दे दें (बहर सूरत) वह हमारी ही तरफ़ लौटाए जाएंगे। (77)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ

आप (स) पर- से	हम ने हाल बयान किया	जो- जिन	उन में से	आप (स) से पहले	बहुत से रसूल	और तहक़ीक़ हम ने भेजे

وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِىَ

वह लाए	कि	किसी रसूल के लिए	और न था	आप (स) पर- से	हम ने हाल नहीं बयान किया	जो- जिन	और उन में से

بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِىَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ

और घाटे में रह गए	हक़ के साथ	फ़ैसला कर दिया गया	अल्लाह का हुक्म	आ गया	सो जब	अल्लाह के हुक्म से	मगर- बग़ैर	कोई निशानी

ع ٨ ١٠ ١٣

هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٧٨﴾ اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ

चौपाए	तुम्हारे लिए	बनाए	वह जिस ने	अल्लाह	78	अहले बातिल	उस वक़्त

لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ

बहुत से फ़ाइदे	उन में	और तुम्हारे लिए	79	तुम खाते हो	और उन से	उन से	ताकि तुम सवार हो

وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِىْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا

और उन पर	तुम्हारे सीनों (दिलों में)	हाजत	उन पर	और ताकि तुम पहुँचो

وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَىَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ﴿٨١﴾

81	तुम इन्कार करोगे	अल्लाह की निशानियों का	तो किन किन	अपनी निशानियां	और वह दिखाता है तुम्हें	80	लदे फिरते हो	और कशतियों पर

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

अन्जाम	हुआ	कैसा	तो वह देखते	ज़मीन में	पस क्या वह चले फिरे नहीं

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً

क़ुव्वत	और बहुत ज़ियादा	इन से	बहुत ज़ियादा	वह थे	इन से क़ब्ल	उन लोगों का जो

وَّاٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾

82	वह कमाते (करते) थे	जो	उन के	वह काम आया	सो न	ज़मीन में	और आसार

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ

इल्म से	उन के पास	ख़ुश हुए (इतराने लगे) उस पर जो	खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	उन के पास आए	फिर जब

وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا

हमारा अज़ाब	उन्हों ने देखा	फिर जब	83	मज़ाक़ उड़ाते	उस का	थे	जो वह	उन्हें	और घेर लिया

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ﴿٨٤﴾

84	शरीक करते	उस के साथ	हम थे	वह जिस	और हम मुन्किर हुए	वह वाहिद	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	वह कहने लगे

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ

अल्लाह का दस्तूर	हमारा अज़ाब	जब उन्हों ने देख लिया	उन का ईमान	उन को नफ़ा देता	तो न हुआ

ع ٧ ٩ ١٣

الَّتِىْ قَدْ خَلَتْ فِىْ عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

85	काफ़िर (जमा)	उस वक़्त	और घाटे में रह गए	उस के बन्दों में	गुज़र चुका है	वह जो

और तहक़ीक़ हम ने आप (स) से पहले बहुत से रसूल भेजे, उन में से (कुछ हैं) जिन का हाल हम ने आप से बयान किया और उन में से (कुछ हैं) जिन का हाल हम ने आप से बयान नहीं किया, और किसी रसूल के लिए (मक़्दूर) न था कि वह कोई निशानी अल्लाह के हुक्म के बग़ैर ले आए, सो जब अल्लाह का हुक्म आ गया, हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया, और अहले बातिल उस वक़्त घाटे में रह गए। (78)
अल्लाह (ही) है जिस ने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए। ताकि तुम सवार हो उन में से (बाज़ पर), और उन में से (बाज़) तुम खाते हो, (79)
और तुम्हारे लिए उन में बहुत से फ़ाइदे हैं और ताकि तुम उन पर (सवार हो कर) अपने दिलों की मुराद (मन्ज़िले मक़्सूद) को पहुँचो और उन पर और कशतियों पर तुम लदे फिरते हो। (80)
और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, तुम अल्लाह की किन किन निशानियों का इन्कार करोगे? (81)
पस क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देखते कि कैसा हुआ अन्जाम उन लोगों का जो उन से क़ब्ल थे, वह तादाद और क़ुव्वत में इन से बहुत ज़ियादा थे, और वह ज़मीन में (इन से बढ़ चढ़ कर) आसार (छोड़ गए) सो जो वह करते थे उन के (कुछ) काम न आया। (82)
फिर जब उन के पास उन के रसूल खुली निशानियों के साथ आए तो वह उस इल्म पर इतराने लगे जो उन के पास था और उन्हें उस (अज़ाब) ने घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (83)
फिर जब उन्हों ने हमारा अज़ाब देखा तो वह कहने लगे हम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाए और हम उस के मुन्किर हुए जिस को हम उस के साथ शरीक करते थे। (84)
तो (उस वक़्त ऐसा) न हुआ कि उन का ईमान उन को नफ़ा देता जब उन्हों ने हमारा अज़ाब देख लिया, अल्लाह का दस्तूर है जो उस के बन्दों में गुज़र चुका (होता चला आया है) और उस वक़्त काफ़िर घाटे में रह गए। (85)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

हा-मीम। (1)

(यह कलाम) नाज़िल किया हुआ है निहायत मेहरबान रहम करने वाले (अल्लाह की तरफ़) से। (2)

यह एक किताब है जिस की आयतें वाज़ेह कर दी गई हैं, कुरआन अ़रबी ज़बान में उन लोगों के लिए जो जानते हैं। (3)

खुशख़बरी देने वाला, डर सुनाने वाला, सो उन में से अक्सर ने मुँह फेर लिया, पस वह सुनते नहीं। (4)

और उन्हों ने कहा कि हमारे दिल पर्दों में हैं उस (बात) से जिस की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, और हमारे कानों में गिरानी है, और हमारे और तुम्हारे दरमियान एक पर्दा है, सो तुम अपना काम करो, बेशक हम अपना काम करते हैं। (5)

आप (स) फ़रमा दें, इस के सिवा नहीं कि मैं तुम जैसा एक बशर हूँ, मेरी तरफ़ वहि की जाती है कि तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस सीधे रहो उस के हुज़ूर और उस से मग़्फ़िरत मांगो, और ख़राबी है मुश्रिकों के लिए। (6)

वह जो ज़कात नहीं देते और वह आख़िरत के मुन्किर हैं। (7)

बेशक जो लोग ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, उन के लिए अजर है न ख़तम होने वाला। (8)

आप (स) फ़रमा दें क्या तुम उस का इन्कार करते हो जिस ने ज़मीन को दो (2) दिनों में पैदा किया और तुम उस के शरीक ठहराते हो, यही है सारे जहानों का रब। (9)

और उस ने उस (ज़मीन) में बनाए उस के ऊपर पहाड़, और उस में बरकत रखी, और उस में चार (4) दिनों में उन की ख़ुराकें मुक़र्रर कीं, यकसां तमाम सवाल करने वालों के लिए। (10)

फिर उस ने आस्मान की तरफ़ तवज्जुह फ़रमाई, और वह एक धुआं था, तो उस ने उस से और ज़मीन से कहा तुम दोनों आओ खुशी से या नाखुशी से, उन दोनों ने कहा, हम दोनों खुशी से हाज़िर हैं। (11)

آيَاتُهَا ٥٤ ❀ (٤١) سُوْرَةُ حٰمٓ اَلسَّجْدَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकुआत 6 | (41) सूरह हा-मीम सजदा | आयात 54

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٢﴾ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا

कुरआन	जुदा जुदा (वाज़ेह) कर दी गईं उस की आयतें	एक किताब	2	रहम करने वाला	निहायत मेहरबान	से	नाज़िल किया हुआ	1	हा-मीम

عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ

पस वह	उन में से अक्सर	सो मुँह फेर लिया	और डर सुनाने वाला	खुशख़बरी देने वाला	3	वह जानते हैं	उन लोगों के लिए	अ़रबी (ज़बान) में

لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٤﴾ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	तुम बुलाते हो हमें	उस से जो	पर्दों में	हमारे दिल	और उन्हों ने कहा	4	वह सुनते नहीं

وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ﴿٥﴾

5	काम करते हैं	बेशक हम	सो तुम काम करो	एक पर्दा	और तुम्हारे दरमियान	और हमारे दरमियान	बोझ-गिरानी	और हमारे कानों में

الثلثة

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ

यकता	माबूद	तुम्हारा माबूद	यह कि	मेरी तरफ़	वहि की जाती है	तुम जैसा	कि मैं एक बशर	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें

فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦﴾ الَّذِيْنَ

वह जो	6	मुश्रिकों के लिए	और ख़राबी	उस से मग़्फ़िरत मांगो	उस की तरफ़ (उस के हुज़ूर)	पस सीधे रहो

لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	बेशक	7	मुन्किर हैं	वह	आख़िरत का	और वह	ज़कात	नहीं देते

ع ١ ٨ ١٥

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٨﴾ قُلْ اَئِنَّكُمْ

क्या तुम	फ़रमा दें	8	ख़तम न होने वाला	अजर	उन के लिए	और उन्हों ने अ़मल किए अच्छे

لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ

उस के	और तुम ठहराते हो	दो (2) दिनों में	ज़मीन	पैदा किया	उस का जिस ने	इन्कार करते हो

اَنْدَادًا ۗ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩﴾ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا

उस के ऊपर	पहाड़ (जमा)	उस में	और उस ने बनाए	9	सारे जहानों का रब	वह	शरीक (जमा)

وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ۗ سَوَآءً

यकसां	चार (4) दिन (जमा)	में	उन की ख़ुराकें	उस में	और मुक़र्रर कीं	उस में	और बरकत रखी

لِّلسَّآئِلِيْنَ ﴿١٠﴾ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ

तो उस ने कहा	एक धुआं	और वह	आस्मान की तरफ़	फिर उस ने तवज्जुह फ़रमाई	10	तमाम सवाल करने वालों के लिए

لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ۗ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿١١﴾

11	खुशी से	हम दोनों आए (हाज़िर हैं)	उन दोनों ने कहा	नाखुशी से	या	खुशी से	तुम दोनों आओ	और ज़मीन से	उस से

فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا

फिर उस ने बनाए	सात आस्मान	दो (2) दिनों में	और वहि कर दी	में	हर आस्मान	उस का काम

وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ

और हम ने ज़ीनत दी	आस्मान	दुनिया	चिराग़ों (सितारों) से	और हिफ़ाज़त के लिए	यह	अन्दाज़ा (फ़ैसला)	ग़ालिब

الْعَلِيْمِ ﴿١٢﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ

इल्म वाला	12	फिर अगर	वह मुँह मोड़ लें	तो फ़रमा दें	मैं डराता हूँ तुम्हें	एक चिंघाड़	जैसी	चिंघाड़

عَادٍ وَّثَمُوْدَ ﴿١٣﴾ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ

आद और समूद	13	जब आए उन के पास	रसूल	उन के आगे से	और उन के पीछे से

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰۗىِٕكَةً

कि तुम न इबादत करो	सिवाए अल्लाह	उन्हों ने जवाब दिया	अगर चाहता	हमारा रब	तो ज़रूर उतारता	फ़रिश्ते

فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا

पस बेशक	उस का जो	तुम भेजे गए हो	उस के साथ	मुन्किर हैं	14	फिर जो	आद	तो वह तकब्बुर (ग़ुरूर) करने लगे

فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۭ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ

ज़मीन (मुल्क) में	नाहक़	और वह कहने लगे	कौन	ज़ियादा	हम से	कुव्वत	क्या नहीं	वह देखते	कि अल्लाह

الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۭ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿١٥﴾

वह जिस ने	पैदा किया उन्हें	वह	बहुत ज़ियादा	उन से	कुव्वत	और वह थे	हमारी आयतों का	इन्कार करते	15

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ

पस हम ने भेजी	उन पर	हवा	तुन्द ओ तेज़	दिनों में	नहूसत	ताकि हम चखाएं उन्हें

عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ

अज़ाब	रुस्वाई	में	दुनिया की ज़िन्दगी	और अलबत्ता अज़ाब	आख़िरत	ज़ियादा रुस्वा करने वाला	और वह

لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٦﴾ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى

मदद न किए जाएंगे	16	और रहे	समूद	सो हम ने रास्ता दिखाया उन्हें	तो उन्हों ने पसंद किया	अन्धा रहना	हिदायत पर

فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾ ج

तो उन्हें आ पकड़ा	चिंघाड़	अज़ाब	ज़िल्लत	उस की सज़ा में जो	वह कमाते (करते थे)	17

ع ٢ ١٠ ١٦ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾ ع وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ

और हम ने बचा लिया	वह लोग जो	ईमान लाए	और वह परहेज़गारी करते थे	18	और जिस दिन	जमा किए जाएंगे	अल्लाह के दुश्मन

اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ

जहन्नम की तरफ़	तो वह	गिरोह गिरोह किए जाएंगे	19	यहां तक कि	जब	वह आएंगे उस के पास	गवाही देंगे

عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾

उन पर	उन के कान	और उन की आँखें	और उन की जिल्दें (गोश्त पोस्त)	उस पर	जो वह करते थे	20

फिर उस ने दो दिनों में सात आस्मान बनाए और हर आस्मान में उस के काम की वहि कर दी, और हम ने आस्माने दुनिया को सितारों से ज़ीनत दी और खूब महफ़ूज़ कर दिया, यह ग़ालिब, इल्म वाले (अल्लाह का) फ़ैसला है। (12)

फिर अगर वह मुहँ मोड़ लें तो आप (स) फ़रमा दें कि मैं तुम्हें डराता हूँ एक चिंघाड़ से, जैसी चिंघाड़ आद ओ समूद (पर अज़ाब आया था)। (13)

जब उन के पास रसूल आए, उन के आगे से और उन के पीछे से कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, तो उन्हों ने जवाब दिया कि अगर हमारा रब चाहता तो ज़रूर फ़रिशते उतारता, पस तुम जिस (पैग़ाम) के साथ भेजे गए हो, हम बेशक उस के मुन्किर हैं। (14)

फिर जो आद थे वह मुल्क में ग़ुरूर करने लगे नाहक़, और वह कहने लगे कि हम से ज़ियादा कुव्वत में कौन है? क्या वह नहीं देखते कि अल्लाह जिस ने उन्हें पैदा किया, वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा है, और वह हमारी आयतों का इन्कार करते थे। (15)

पस हम ने भेजी उन पर नहूसत के दिनों में तुन्द ओ तेज़ हवा, ताकि हम उन्हें रुस्वाई का अ़ज़ाब चखाएं दुनिया की ज़िन्दगी में, और अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब ज़ियादा रुस्वा करने वाला है, और न वह मदद किए जाएंगे। (16)

और रहे समूद, सो हम ने उन्हें रास्ता दिखाया तो उन्हों ने हिदायत (के मुक़ाबले) पर अन्धा रहना पसंद किया, तो उन्हें चिंघाड़ ने आ पकड़ा (यानी) ज़िल्लत के अ़ज़ाब ने, उस की सज़ा में जो वह करते थे। (17)

और हम ने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए, और वह परहेज़गारी करते थे। (18)

और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन जहन्नम की तरफ़ जमा किए (हांके) जाएंगे तो वह गिरोह दर गिरोह (तक़सीम) कर दिए जाएंगे। (19)

यहां तक कि जब वह उस के पास आएंगे तो उन पर उन के कान, और उन की आँखें, और उन के गोश्त पोस्त गवाही देंगे उस पर जो वह करते थे। (20)

وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ؕ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ

हमें गोयाई दी अल्लाह ने	वह जवाब देंगे	हम पर (हमारे ख़िलाफ़)	तुम ने गवाही दी	क्यों	अपनी जिल्दों (गोश्त पोस्त) से	और वह कहेंगे

الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ

और उसी की तरफ़	पहली बार	तुम्हें पैदा किया	और वह-उस	हर शै	गोया अता फ़रमाया	वह जिस ने

تُرْجَعُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ

तुम पर (तुम्हारे ख़िलाफ़)	कि गवाही देंगे	तुम छुपाते थे	और जो	21	तुम लौटाए जाओगे

سَمْعُكُمْ وَلَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	तुम ने गुमान कर लिया था	और लेकिन (बल्कि)	और न तुम्हारी जिल्दें (गोश्त पोस्त)	और न तुम्हारी आँखें	तुम्हारे कान

لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ

वह जो	तुम्हारा गुमान	और उस	22	तुम करते हो	जो	बहुत कुछ	नहीं जानता

ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ فَاِنْ

फिर अगर	23	ख़सारा पाने वाले	से	सो तुम हो गए	हलाक किया तुम्हें	अपने रब के मुतअ़ल्लिक़	तुम ने गुमान किया था

يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ

से	तो न वह	वह माफ़ी चाहें	और अगर	उन के लिए	ठिकाना	तो जहन्नम	वह सब्र करें

الْمُعْتَبِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا

जो	तो उन्हों ने आरास्ता कर दिखाया उन के लिए	कुछ हमनशीन	उन के लिए	और हम ने मुक़र्रर किए	24	माफ़ी क़ुबूल किए जाने वाले

بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ

उन उम्मतों में	क़ौल	उन पर	और पूरा हो गया	और जो उन के पीछे	उन के आगे

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ

बेशक वह	और इन्सान	जिन्नात में से-की	उन से क़ब्ल	जो गुज़र चुकीं

كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ع وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ ٣ ع ١٧

इस क़ुरआन को	तुम मत सुनो	उन्हों ने कुफ़्र किया	उन लोगों ने जो	और कहा	25	ख़सारा पाने वाले थे

وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ﴿٢٦﴾ فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

उन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	पस हम ज़रूर चखाएंगे	26	तुम ग़ालिब आ जाओ	शायद कि तुम	उस में	और गुल मचाओ

عَذَابًا شَدِيْدًا وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ

वह जो	बदतरीन	और हम उन्हें ज़रूर बदला देंगे	सख़्त अ़ज़ाब

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا

उस में	उन के लिए	जहन्नम	अल्लाह के दुश्मन (जमा)	बदला	यह	27	वह करते थे (आमाल)

دَارُ الْخُلْدِ ؕ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	इन्कार करते	हमारी आयतों का	वह थे	उस का जो	बदला	हमेशगी का घर

और वह अपने गोश्त पोस्त से कहेंगे, तुम ने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यों दी? वह जवाब देंगे: हमें उस अल्लाह ने गोयाई दी जिस ने हर शै को गोया कर दिया है, और उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (21)

और जो तुम छुपाते थे (तुम ने समझा) कि तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही न देंगे तुम्हारे कान और न तुम्हारी आँखें और न तुम्हारे गोश्त पोस्त, बल्कि तुम ने गुमान कर लिया था कि अल्लाह उस से (उस के बारे में) बहुत कुछ नहीं जानता जो तुम करते हो। (22)

तुम्हारे उस गुमान (ख़याले बातिल) ने जो तुम ने अपने रब के बारे में किया था तुम्हें हलाक किया, सो तुम हो गए ख़सारा पाने वालों में से। (23)

फिर अगर वह सब्र करें तो (भी) जहन्नम उन के लिए ठिकाना है, और अगर वह (अब) माफ़ी चाहें तो वह माफ़ी क़ुबूल किए जाने वालों में से न होंगे। (24)

और हम ने उन के कुछ हमनशीन मुक़र्रर किए, तो उन्हों ने उन के लिए आरास्ता कर दिखाया जो उन के आगे और जो उन के पीछे था और उन पर (अ़ज़ाब की वईद का) क़ौल पूरा हो गया जैसे उन उम्मतों में जो गुज़र चुकी हैं उन से क़बल जिन्नात और इन्सानों की, बेशक वह ख़सारा पाने वाले थे। (25)

और उन लोगों ने कहा जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िरों ने) कि तुम इस क़ुरआन को सुनो ही मत, और अगर (सुनाने लगें) तो इस में गुल मचाओ, शायद कि तुम ग़ालिब आ जाओ। (26)

पस हम काफ़िरों को ज़रूर सख़्त अ़ज़ाब चखाएंगे, और अलबत्ता हम उन के बदतरीन आमाल का उन्हें ज़रूर बदला देंगे। (27)

यह है अल्लाह के दुश्मनों का बदला जहन्नम, और उन के लिए है उस में हमेशगी का घर, उस का बदला जो वह हमारी आयतों का इन्कार करते थे। (28)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ

जिन्नात में से	जिन्हों ने गुमराह किया हमें	उन्हें	हमें दिखा दे	ऐ हमारे रब	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहेंगे

وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٢٩﴾

29	इन्तिहाई ज़लील (जमा)	से	ताकि वह हों	अपने पाऊँ	तले	हम उन दोनों को डालें	और इन्सानों

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ

उन पर	उतरते हैं	वह साबित क़दम रहे	फिर	हमारा रब अल्लाह	उन्हों ने कहा	वह जिन्हों ने	बेशक

الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ

वह जो	जन्नत पर	और तुम ख़ुश हो जाओ	और न ग़मगीन हो	कि न तुम ख़ौफ़ खाओ	फ़रिश्ते

كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ

और आख़िरत में	दुनिया	ज़िन्दगी में	तुम्हारे रफ़ीक़	हम	30	तुम्हें वादा दिया जाता है

وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ﴿٣١﴾ نُزُلًا مِّنْ

से	ज़ियाफ़त	31	तुम मांगोगे	जो	उस में	और तुम्हारे लिए	तुम्हारे दिल	जो चाहें	उस में	और तुम्हारे लिए

ع ٤ ١٨ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ

और अ़मल करे	अल्लाह की तरफ़	बुलाए	उस से जो	बात	बेहतर	और किस	32	रहम करने वाला	बख़्शने वाला

صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ

नेकी	और बराबर नहीं होती	33	मुसलमानों	से	बेशक मैं	और वह कहे	अच्छे

وَلَا السَّيِّئَةُ ۭ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ

और उस के दरमियान	आप के दरमियान	वह जो शख़्स	तो यकायक	बेहतरीन	वह	उस से जो	दूर कर दें आप (स)	और न बुराई

عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ﴿٣٤﴾ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا

और नहीं	सब्र किया	वह जिन्हों ने	मगर	और नहीं मिलती यह	34	क़रावती (जिगरी)	दोस्त	गोया कि वह	अ़दावत

يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٣٥﴾ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ

कोई वस्वसा	शैतान	से	तुम्हें वस्वसा आए	और अगर	35	बड़े नसीब वाले	मगर	मिलती यह

فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٦﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ

और दिन	रात	उस की निशानियां	और से	36	जानने वाला	सुनने वाला	वही	बेशक वह	अल्लाह की	तो पनाह चाहें

وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۭ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ

और तुम सिज्दा करो अल्लाह को	चाँद को	और न	सूरज को	तुम न सिज्दा करो	और चाँद	और सूरज

الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ

सो वह जो	तकब्बुर करें	पस अगर वह	37	इबादत करते	सिर्फ़ उस की	तुम हो	अगर	पैदा किया उन्हें	वह जिस ने

السجدة ١١ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ﴿٣٨﴾

38	नहीं उकताते	और वह	और दिन	रात	उस की	वह तस्बीह करते हैं	आप के रब के नज़्दीक

और काफ़िर कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमें दिखा दे जिन्हों ने हमें गुमराह किया था जिन्नात में से और इन्सानों में से कि हम उन को अपने पाऊँ तले (रौन्द) डालें ताकि वह इन्तिहाई ज़लीलों में से हों। (29)

बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर उस पर साबित क़दम रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं कि न तुम ख़ौफ़ खाओ और न तुम ग़मगीन हो, और तमु उस जन्नत पर ख़ुश हो जाओ जिस का तुम्हें वादा दिया जाता है। (30)

हम तुम्हारे रफ़ीक़ हैं ज़िन्दगी में दुनिया की और आख़िरत में (भी), और तुम्हारे लिए उस में (मौजूद हैं) जो तुम्हारे दिल चाहें, और तुम्हारे लिए उस में (मौजूद हैं) जो तुम मांगोगे। (31)

(यह) ज़ियाफ़त है बख़्शने वाले, रहीम (अल्लाह) की तरफ़ से। (32)

और उस से बेहतर किस का क़ौल? जो बुलाए अल्लाह की तरफ़ और अच्छे अ़मल करे और कहेः बेशक मैं मुसलमानों में से हूँ। (33)

और बराबर नहीं होती नेकी और बुराई, आप (स) (बुराई को) इस (अन्दाज़ से) दूर करें जो बेहतरीन हो तो यकायक वह शख़्स कि आप के दरमियान और उस के दरमियान अ़दावत थी (ऐसे हो जाएगा कि) गोया वह जिगरी दोस्त है। (34)

और यह (सिफ़त) नहीं मिलती मगर उन्हें जिन्हों ने सब्र किया और यह नहीं मिलती मगर बड़े नसीब वालों को। (35)

और अगर तुम्हें शैतान की तरफ़ से आए कोई वस्वसा तो अल्लाह की पनाह चाहें, बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है। (36)

और उस की निशानियों में से हैं रात और दिन, और सूरज और चाँद, तुम न सूरज को सिज्दा करो न चाँद को, और तुम अल्लाह को सिज्दा करो, वह जिस ने उन (सब) को पैदा किया अगर तुम सिर्फ़ उस की इबादत करते हो। (37)

पस अगर वह तकब्बुर करें (तो उस से क्या फ़र्क़ पड़ता है), सो वह (फ़रिश्ते) जो आप के रब के नज़्दीक हैं वह रात दिन उस की तस्बीह करते हैं, और वह उकताते नहीं। (38)

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ

पानी	उस पर	हम ने उतारा	फिर जब	दबी हुई (सुनसान)	ज़मीन	तू देखता है	कि तू	और उस की निशानियों में से

اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

हर शै पर	बेशक वह	अलबत्ता ज़िन्दा करने वाला मुर्दों को	उस को ज़िन्दा किया	वह जिस ने	बेशक	और फूलती है	वह लहलहाने लगती है

قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ

हम पर	वह पोशीदा नहीं	हमारी आयात में	कज रवी करते हैं	जो लोग	बेशक	39	कुदरत रखने वाला

اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا

तुम करो	रोज़े क़ियामत	अमान के साथ	आए	या जो	बेहतर	आग में	डाला जाए	तो क्या जो

مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا

जब	ज़िक्र (क़ुरआन) का	वह जिन्हों ने इन्कार किया	बेशक	40	देखने वाला	जो तुम करते हो	बेशक वह	जो तुम चाहो

جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ﴿٤١﴾ ۙ لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ

उस के सामने से	बातिल	उस के पास नहीं आता	41	ज़बरदस्त	अलबत्ता किताब है	और बेशक यह	वह आया उन के पास

وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿٤٢﴾ مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا

सिवाए	आप को	नहीं कहा जाता	42	सज़ावारे हम्द	हिक्मत वाले	से	नाज़िल किया गया	और न उस के पीछे से

مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ

और सज़ा देने वाला	बड़ी मग़्फ़िरत वाला	आप (स) का रब	बेशक	आप (स) से क़ब्ल	रसूलों को	जो कहा जा चुका है

اَلِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ

उस की आयतें	साफ़ बयान की गईं	क्यों न	तो वह कहते	अ़जमी (ज़बान का)	क़ुरआन (को)	और अगर हम बनाते उसे	43	दर्दनाक

ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ

और शिफ़ा	हिदायत	ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	वह-यह	फ़रमा दें	और अ़रबी (रसूल)	क्या अ़जमी (किताब)

وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ

यह लोग	अन्धापन	उन पर	और वह-यह	गिरानी	उन के कानों में	ईमान नहीं लाए	और जो लोग

يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ ﴿٤٤﴾ ۧ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ ع ١٢ ١٩

किताब	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने दी	44	दूर	किसी जगह	से	पुकारे जाते हैं

فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ

तो फ़ैसला हो चुका होता	आप (स) के रब की तरफ़ से	पहले ठहर चुकी	एक बात	और अगर न होती	उस में	तो इख़्तिलाफ़ किया गया

بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿٤٥﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا

अच्छे	अ़मल किए	जो-जिस	45	तरद्दुद में डालने वाले शक में	उस से	ज़रूर शक में	और बेशक वह	उन के दरमियान

فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٤٦﴾

46	अपने बन्दों पर	मुतलक़ ज़ुल्म करने वाला	आप (स) का रब	और नहीं	तो उस पर (उस का वबाल)	बुराई की	और जिस	तो अपनी ज़ात के लिए

قرا حفص بتسهيل الهمزة الثانية ١٢

और उस की निशानियों में से है कि तू ज़मीन को सुनसान देखता है, फिर जब हम ने उस पर पानी उतारा तो वह लहलहाने लगती है और फूलती है, बेशक वह जिस ने उस को ज़िन्दा किया, अलबत्ता वह मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, बेशक वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (39)

बेशक जो लोग हमारी आयात में कज रवी करते हैं वह हम पर (हम से) पोशीदा नहीं, तो क्या जो शख़्स आग में डाला जाए बेहतर है या जो रोज़े क़ियामत अमान के साथ आए? तुम जो चाहो करो, बेशक तुम जो कुछ करते हो वह देखने वाला है। (40)

बेशक जिन लोगों ने क़ुरआन का इन्कार किया जब वह उन के पास आया (वह अपना अन्जाम देख लेंगे), बेशक यह ज़बरदस्त किताब है। (41)

उस के पास नहीं आता बातिल उस के सामने से और न उस के पीछे से, नाज़िल किया गया हिक्मत वाले, सज़ावारे हम्द (अल्लाह की तरफ़) से। (42)

आप (स) को उस के सिवा नहीं कहा जाता जो आप (स) से पहले रसूलों को कहा जा चुका है, बेशक आप (स) का रब बड़ी मग़्फ़िरत वाला, और दर्दनाक सज़ा देने वाला है। (43)

और अगर हम क़ुरआन को अ़जमी ज़बान का बनाते तो वह कहतेः उस की आयतें क्यों न साफ़ साफ़ बयान की गईं? क्या किताब अ़जमी और रसूल अ़रबी? आप (स) फ़रमा दें: जो ईमान लाए यह उन लोगों के लिए हिदायत और शिफ़ा है, और जो लोग ईमान नहीं लाते उन के कानों में गिरानी है और यह उन के लिए आंखों पर पट्टी, (गोया) यह लोग पुकारे जाते हैं किसी दूर जगह से। (44)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को किताब दी तो उस में इख़्तिलाफ़ किया गया और अगर न आप (स) के रब की तरफ़ से एक बात पहले ठहर चुकी होती तो उन के दरमियान फ़ैसला हो चुका होता, और बेशक वह ज़रूर उस से तरद्दुद में डालने वाले शक में हैं। (45)

जिस ने अच्छे अ़मल किए तो अपनी ज़ात के लिए (किए) और जिस ने बुराई की उस का वबाल उसी पर होगा, और आप (स) का रब अपने बन्दों पर मुतलक़ ज़ुल्म करने वाला नहीं। (46)